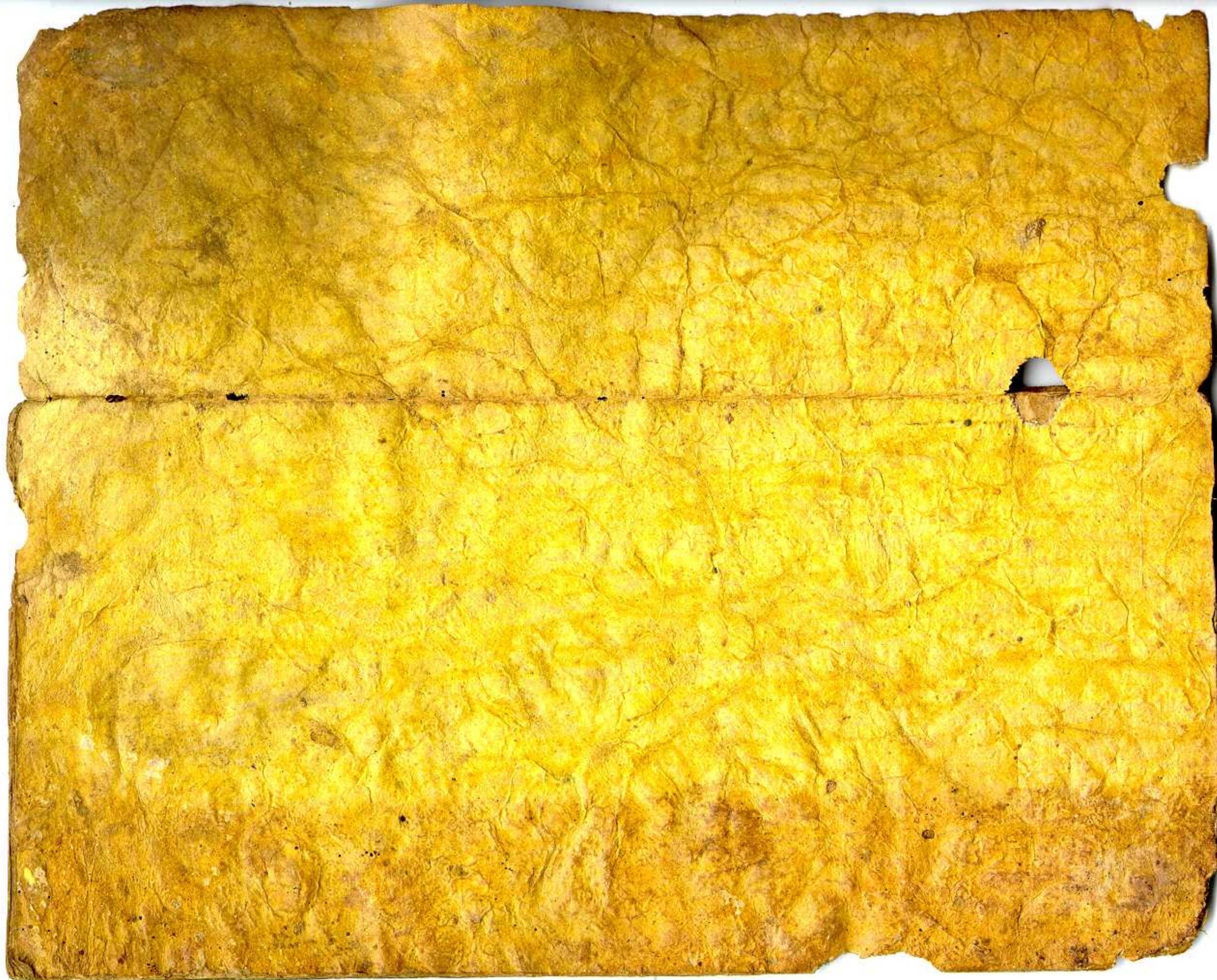


सी ० प्रजापति सुकुमुल

५ ३



रं नमः श्रीवज्रवामाहिदेवियानरुहसमकुलमृगागविधिमाहमं पाथाकपेभः
 यंच सा लिङ्ग उङ्ग दधुतः स्वायेगहजने. कच्छलागचोसलिङ्गनेः ट्वेङ्गदयाः
 कोनसः कोगलिङ्गनेः चलातागदपादूधुतने सविलः च्यादिगसुः वृद्धसम्म
 सानवलिङ्गलिङ्गनेः सगन्धः उः चलाकनसगषट्कचोयवजवलिः पद्मावलि
 गोलावलिः चोयगमनः पंचगर्वः पादगारवकजगिनिगजूरुवाहिः जूदिः
 निधायनायानाजगलिचायागुल्लमकुले ॥ पञ्चगर्वकायगधनपातु
 ग्वजपूजागधनसलाहिसद्वाहालस्वीः जूखः नायनस्यः सिद्ध
 थायगवाचकः पयानाचूयादिगधनमकुलसखानवायग

धन रावना स्वी नस्यैः स जी न थं पूजा ॥ धनं लिय कू सा लिय पूजाः
षट् जी गि निय पूजा ॥ अष्ट समान पूजाः नन्दा वलि विष ॥ धन
मूल मधु लया मधु सः मूल पात्र सङ्का ॥ धन नाओ ॥ घट्ट रु छि
नू याओः च उ नर नू याओ ॥ धन सला हि दे द्वा ये ॥ देओ पूजा ॥
सिद्ध नयः मरु निरु य ॥ आदि काय ॥ मधु लथिलेः कि न न
ह मा वि या यः क न स सगः मन पूजा ॥ था यिं पूजा ॥ दजा पू
जाः रम य पूजा ॥ चक्र पूजा ॥ मधु लथिलेः कि न नः संग माह
नि द्वा य ॥ कोटि सिद्धः गु लरः था कालि रु का निय ॥ ॐ ॥

यनद्वाजधानय॥ धूर्कनाओः लूखाचायकें॥ दिगुसक्तयः क्षात्र
कजस॥ अयप्रसाद॥ सलाहि सिद्धं नित्यः आउ कषा वियः षट्
जोगिनिः कमाकथं विय॥ पञ्चसालहिय॥ हसयाचक्रः वि
र्ज॥ जयेंदथापिलोङ्गाय॥ पाशथाकालि. लिपावियः छेत्त
सलीकपूय॥ ॐ ॥ ॥ ॐ नमश्चीकोलास्याये॥ ॥
ॐ नमश्चीमनवणसख. गुप्त्वचननकुम. लायसम्यहाना
वलासनंकजाये॥ नमो॥ ॐ त्यादहगजहिताः वचदेहकालिः चक्र
प्रहाविजयानिः नैकगुनूपिः वज्रगनागुनगणैः समलीकनामीः

मह्ये च यामि जननि जि नानाः नमस्तु न्य ना प्रवे सान नः धी वज
दवी त्रयं मालेयः नदा काल जग न सच का गि ष्या मिः जग न क नाः
ओं नग्रा स्रफाने स्रहं रुं रुद्र ॥ ओं गृ क्र नि गृ क्र रुं रुद्र ॥ ओं गृ क्राय
य रुं रुद्र ॥ ओं आ नय हो र ग व न वि द्या ना ज रुं रुद्र ॥ ध न पा व स
चो न थ का या ओः मा त स य रं नि नः वा क् थ श ल ॥ ध न पा व क या
ओं म नु सी ध न या य वा क् ॥ ओं हं ओं किं जू र वं खा हा ॥ पू न पि त्या
सु न्य ना रा व य न ॥ जी ४ का ल न य द्म री ज नः मा का ज द मा मा किः रु
कुं दि रु जी व ज रे रु की ॥ रुं को न द गू का ल ४ रुं दि रु जी व ज र

हस्तांगयोसंयुक्त्यालगात्तुव्यस्तुनंयस्य ॥ ४५ ॥ न ४ रुहो ४ कीं अखंसा
हागो ॐ सर्वरुकासिनिःसर्वरुकासो धामिः शुद्धवर्जनिः कोऽवस्थ
बनीः सर्वद्वयव्यापिनि साधय २२ ॥ ॐ रुका गेरुज न वरुहो ४ का
नगन्धनासनिः कीं काजवीजहस्तां चः अमृ नं अमृ न प्रवे सय २२ ॥ थ
नदयाला हाति सस्वानवीय को हात ॥ वाक् ॥ ॐ वेंवज्जवा नाहिये रु
ह ॥ ॐ हां यो जा मि नि ये रुं रु ॥ ॐ कीं मा मा हि नि ये रुं रु ॥ ॐ ऊं ऊं
सचा जि नि ये रुं रु ॥ ॐ रुं रुं से जा सी नि ये रुं रु ॥ ॐ रुं रुं रच मिः
को ये रुं रु ॥ थ न जे ॐ ला हाति सस्वानवीय ॥ वाक् ॥ ॐ वें व

[illegible]

हृद् इत्याह ॥ धनदेवीया मूलमकुन पावस चोतः थदपा ला हानि
न मधुलसहाय ॥ धन विपना मूडा वलि स अचिष्ट नया य ॥ वाक्
ओं आ ४३ ॥ मधुल अचिष्ट न ॥ धन स्वान च न हू नाओं ॥ ऊँ ओ ख ओ वा
हाल सनिने ॥ ओं लान मेज क्रूर ॥ स्वाने क्य ॥ वाक् ॥ ओं आ के मान
मेज क्रूर ॥ स्वराव सुध ०० त्यादि ॥ ०० ति म कु मू चार्य पु ला सु जाल मनी
प्रनिधन चि रु ज ली व ग मे दा स कौ ति मे जा न ग ग हा दे ला ॥ नि म मे
चक्र ॥ वि दल स ली ल हू ॥ मध्य पि न स वृ ह द या य नि वा स द क्रि द ॥ व ल
लि का लिय को उर्द्ध तिल ॥ सु न यालि विष्ट न दि स मधुल मध्य ॥ वं को

जः जकै नस्य प्रिय नः श्री रगव निवज वा जाहिसु न्धु सैधु नव धु रीः
७५ अतुलित नको दस्य राव मूलव काः । रेष धादु मूरिय द क्रि धा का ला
न धाः वा मया रथे ध नखे ली ग वाम क न गृहि न ज क पू धु लि न क या
लः द क्रि रथ ध नार्द्धः नील वज क रिकीः धा द न व धा रु मा जि निर्वे श ना
सि ज सि नील द रालि मा ला वे छि तीः मूक नील कू न जि नो नू हीः प्र नि म
ख ने प्र प्र यः धु व ध नू धि न मूरवी स न त न न सि नो धा नि म हा जा र्ज क मा
७६ अ न वी जः वि रु लः सा म्प जा ड र या न कः क नू धा ल न धा नः न व ना य
ज सै ४ स म चि नाः च क्रि कू धु ल क छि लो च कः मे ख ला मू धा दि रेष ध्म डा

मृडिवासफाके किजर्धाः वज्रजालिप्रहामधुली. मर्द्धपर्यंकनृत्यलि
नी. रगवनिहावयन ॥ थनदवयाग हावनावाक ॥ निम्मानवकस्मि
नं वं कालजालिमाता. हिम्भकनिष्ठतवनवारिनी. हानदवनिमाक
व्यः समयदवत्य हावयन ॥ हं ३. ला मूडादस्य ॥ थन अर्घपात्रसः
अर्घानलखनय ॥ ओं आ. औ. वज्रवा जाहिप्रवसुका लायपाशायः आच
मनीप्रनिष्ठस्वाहा ॥ ओं. हं. वं. हां ॥ सला हि सस्वानवाय ॥ ओं. ओं. ओं. सर्ववृद्धः
जाकि. निर्यवज्रपूर्यप्रनिष्ठस्वाहा ॥ ओं. वज्रवर्धियवज्रपूर्यप्रनि
ष्ठस्वाहा ॥ ओं. वज्रवर्जानियवज्रपूर्यप्रनिष्ठस्वाहा ॥

कैरुद्र

दधुसगाउँदिया नवजपूष्यप्रति छुंरुद्रस्वाहा ॥ पूर्वसगाउँपूष्यप्रि
त्रियेवजपूष्यप्रति छुंस्वाहा ॥ उरुजगाउँकोमज्जुपिनियेवजपूष्यप्रति
छुंरुद्रस्वाहा ॥ पश्चिमगाउँहीहनायेवजपूष्यप्रति छुंरुद्रस्वाहा ॥
दक्षिणगाउँधर्मकायेवजपूष्यप्रति छुंरुद्रस्वाहा ॥ ॐ नमो गाउँसंरा
गकायेवजपूष्यप्रति छुंरुद्रस्वाहा ॥ वायुव्यगाउँनिर्मोनकायेव
जपूष्यप्रति छुंरुद्रस्वाहा ॥ नैमल्यगाउँमहासखकायेवजपूष्यप्र
ति छुंरुद्रस्वाहा ॥ अग्निगाउँजकिदियेकैरुद्र ॥ पूर्वहुजानगाउँला
मैकैरुद्र ॥ ॐ सानकीगाउँखेज्जीहैकैरुद्र ॥ वायुवकीगाउँजुपिनि





१ ओं वैवज्वा नाहियकं रुद्र ॥ नैमन ॥ ओं हां यां जाति निशकं रुद्र ॥ रुद्र न ॥
यकं रुद्र ॥ यकं रुद्र ॥ ओं कं किं सं वा निनि कं रुद्र ॥ वीचुव कं ॥ ओं कं कं स
जास निशकं रुद्र ॥ ॥ ओं रुद्र रुद्र च वि, काय कं रुद्र ॥ अरुने कं ॥
ओं आनन्दवज्ज प्रथकं रुद्र ॥ प्र ॥ ओं पनमानन्दवज्ज प्रथकं रुद्र ॥
उग ॥ ओं विजमानन्द प्रथकं रुद्र ॥ य ॥ ओं सरुजानन्दवज्ज प्रथकं
रुद्र ॥ द ॥ यदिग सर्वोयः थनयं च यहा नयुजा ॥ थनया दस गा स्या ॥
धं छे वा दन ॥ ओं सर्व रुद्रान ॥ ओं काल मधुय गलां गल कृत विं शुन
ग्रय गला विकल्पि र्म सत्वा एज नयुग पदाहिका लीः नमा मिज ग
देव रुद्रकाः नाहिव कं रुद्र जीवका सिमां वज्ज वा जीज सत्वा वाः माध

ओं कं कं स
मां मां हि नो य कं रुद्र

ल.

साधनसयाननपदीत्यां नमि वद नानर्तविषी ॥ धन पायकायां
नर्तन ॥ ॐ अ० आ० क० रु० द्र० द्यादि ॥ ॐ नमो रगवर्तव वज्र वा जादि य० क०
रु० ॥ ॐ नमो रगवर्तव अ० प० जा० जि० न० क० रु० ॥ ॐ नमो रगवर्तव सर्व
रु० वयाव रु० रु० रु० ॥ ॐ नमो वज्रा स० नः अ० प० जा० जि० न० व० स्यै क० जि
न० प्र० मा० मि० नि० रु० रु० ॥ ॐ जी० व० नि० ॥ अ० ध० नि० ॥ व० री० द० नि० ॥ क० ला० लि० नि०
रु० रु० ॥ ॐ स० ग० सि० नि० मा० जि० नि० शु० प्र० रु० द० नि० प० जा० रु० रु० रु० ॥ ॐ नमो
अ० य० वि० ज० य० अ० रु० नि० रु० रु० नि० मो० रु० नि० य० रु० रु० ॥ ॐ नमो वज्री नीव
जवा नाहिः वज्र जी० मि० नि० का० मे० ग्य० जि० ख० अ० रु० रु० ॥ धन जा० कि० रु०

[illegible]

यश्च न गच्छन् देवी च पुत्राली प्रपन्निष्ठ जयदियवक्त्रा कृत्यमानः महासुखवच
कंदवी त्ववन् गच्छवदन्त मध्या जयाः स्त्रायिर्गयश्च न ॥ १०० चन्दालि चक्र मयश्चालि
निलिमान चक्राः द्वे काज प्रयिनी ००० विन्दु हि नानादादवी प्रपा मल्ल मनु
००० जकाले रवा र्द गनाः काय धर्म संहो गचक्र मूहि य महासुख मयः स्वहिकै प्र
वेत्ता न ग महासुख माय श न या को न सुख महासुख मयः स्वहिकै प्रवेत्ता न ग महासु
ख चक्र गत्वाः महाकलावली न संहि दधन क्रूर वन् गच्छवदन्त मध्या जयाः स्त्रायिर्गयश्च न ॥ १००
ययनी क न मे वाचि रूपद विष्ट मन् ॥ या या दि ॥ अर्धो तं खः अर्ध पात्र स्व ग्व त स न
य ॥ १०० श्री वज्र ह ह नूक प्रवत्त का जायः पा या र्ध ग्रा च म नै प्रोक्त म नै प्रोक्ति च स्त्रा हा ॥
जकै वे हो न ह नं स लो हि स स्त्रा न वी य ॥ वा र्क क्रा पा या र्ध ॥ यै च प हा ज प्रोक्त ॥

षी ७ जाला ह्य ॥ धर्म वा द न मुनि ॥ त म न ॥ जा कि का या ॥ हा ज या ॥
चो नै ॥ न न स व क न ॥ अ टि नी रा धि नी गु लि प च र ह चि क व ज ॥ सूर्य मा का
जा धि धि नः न ल्ये व नाम रु ली गु लि खः प द प ग का न ॥ अ का न ऊ च नु म
का जा धि धि नै वि रा य ॥ न र्थ म ध ध ग क सूर्य न ल्ये व दे वी पू मा स्नान
स ल किं रु नां वि चि त्वा ॥ किं व नि न ॥ ध न जा प जी ग या य ॥ य ध म्मा थ
ओ क हा यः ॥ उ न्नि रु नि य पा ग ॥ ध न ऊ र्ध्व क मा अ ले ख म य ॥ वा क्त ॥
ओ किं व ज वा ना हि प व स्का जा यः ॥ या या ध र्मा च मे नै प्रो क्त म नै प्र नि द्ध स्था
हा ॥ स ल हि स ल्वा न वी र ॥ वा क्त ॥ क्रा पा या गुं र्थः ॥ पं ची प चा न पू जा ॥

षीदलास्याः घृष्टवादनः कुनि ॥ सर्वरूपानः पूषादि ॥ ओं कालमघ
पनलाकलो कलविन्दुयपनलाधिकक्षिपंसत्वाहीजनयूगयदादिः
कात्वीनमामिजगदेवहृत्कोः नास्तिचक्रकुरुतां वृवातिनीः वज्रवा
जिकजसरावी सोधसायजयनीः त्वीनमामिवदवानती ॥ थनयाप्रक
याडीः नर्येनविष्य ॥ ॥ थनवलि सतीषच्छुल्लनयः वृक्ष ॥ नमीय
कात्रेनवायूमधुलः नश्यपिजजानाकवक्रिः आ ॥ जनिनमूषु विर्यकनचूजिकाप
प्रिष्टपन्नराजनः विर्विन्नगुपावदेकरकादिके ॥ ओं कौं आः स्वः कः ताः माः पाः गोः वः
जानयंचाम्मयचपदियनूपैः यवनमधुलीय लि नयजतिनाग्निनापवित्तिनन

दृष्टु नद नूय जिः आ का ज उ नि न वि रुं स्त्री न त्रि रं रु त्वा हि मा प्री म त्रि गो र्धा मू र्वी
 न न म यैः ख ली ग न न वा विः विलि न पा जा ज द स ह स म मि श्र य सि नि ह न वि चि क य
 न ग न इ य जि उं आ ह कं वृ ल्य क ज य र्द ह य न उ मि लि म्ब द स दि ग व र्हि वी ज म्बः
 जि ह्माः स्ना मा म न मा नियः न रुं वा क जेषू प्र वं ज य ॥ रुं का ज य र्थ न यू र्व
 र्कः रु ग व नि मा कृ थ नि यू ज न र्हं य यः उं का जा दि क म पि क स स्य वि
 लि न व लो क ॥ उं आ र्की वं ज वा जा दि प्र व स का जा य या र्ही जू र्धं आ च न
 नैः प्रो क्त म नै प्र नि कृ त्वा हा ॥ ज रुं व र्हो ॥ वा लि स स्ना न वी यैः वा र्कः का
 या या रुं ॥ यै व वा यः यं च प हा ज पू जाः यी द स ता त्या ॥ र्ध थ वा द न ॥

ॐ कूं स्वाहा ॥ वज्र ॥ ॐ हूं स्वाहा ॥ धी ध ॥ ॐ कमल मेघ पटलान्न ॥ त्यादि ॥
क्रा पा या गु ॥ न प न ॥ ॐ श्री श्री कूं हूं ॥ त्यादि ॥ ॐ नमो हग व न वें वज्र वा
जाहि ॥ त्यादि ॥ क्रा पा या गु ॥ वी यू जा ॥ ह सु ल ॥ ध न ॥ न नो आ लि का लि
प जि न न च उ सूर्य्य स्व रा व क ज द यां न र्ग न कूं का ज द द्या ॥ ॐ अन्यो न्या नू ग
ना सर्व धर्मो ॥ ॐ प ज स जा नू ग ना सर्व धर्मो ॥ अ त्यं ना नू ग ना सर्व धर्मो ॥ ॐ
देव्य प्र मानं स म ये प्र मानं न द न वा चः ह ल प्र मानं पु न न स त्य न र वें य
ज नाः देव्या म मानू य ह हं तु ह ना ॥ ॐ र व ह कं जि द्वा नी वि रा व्य ॥ ॐ वज्र
ज लि न ऊ कूं वी ही ॥ वज्र वा जा हि स म य स्व द द्या ही ॥ ॥ ध न स्वा न जा

किं काया जीवति सहायके । वाक् ॥ ॐ स्वस्व स्वाहिरवाहि सर्वज के
जाके ससु न प्रमपि ॥ ॐ मांदा जय समा तज कज किं हा द्वयः ॥ ॐ म
वति गुरुः समय जके तु सर्वे सिद्धि मे प्रयच्छतुः ॥ ॐ व नथे व सुज
थः पिठाथः जिघ्रथ मागिकाः कुमर्थः मम सर्वो का जगयाः सन सुख प
वृद्धयः सहायका नीरुवंतु रुरुं रुरुं रुरुं रुरुं ॥ वलि पूजाः दंडी पूजाः
किं निनः गात्रः हिली कवीने ॥ सुगा क्रज ॥ ॥ ॐ वज्र सत्व समय म
नूपा लयः वज्र सत्वे नय निष्ठ दम मरुवः सुभा ॥ ॐ मरुवः सुभा ॥ ॐ मरु
वः ॥ ॐ नूज क मरुवः सर्वे सिद्धि मे प्रयच्छः सर्व कर्म सुच मचिरुः ॥ ॐ

यीं कृ शं कं ह ह ह हो र ग व नः सर्वे न थ ग न व ज मा म्भ म्भ व जी र व
 म हा सु म य स त्व आ ॥ ॥ वि स र्ज नः क मा प न ग म्भु च यः वा क् ॥
 ओं कृ गो व स र्वे स त्वा थ सि द्धिं द त्वा य थ नू ग मः ग द्ध र्च वी चि वि धि कः पू
 न जा य ग म ला थ ओं आ कं ॥ व र्ज म धु रं म् ॥ ॥ पू र्ण ति व ज वा जा हि
 मूर व्या ध्या न स मा धि स मा फ ॥ ॥ शु रं द या न् स र्वे दा का र्ण ॥ ॥



